अब्दुर्रहमान चुगताई की कला और बंगाल चित्र शैली का पारस्परिक सम्बन्ध : 'एक अध्ययन'

डा० नाज़िमा इरफान
प्रवक्ता, चित्रकला विभाग
आर०जी०पी०जी० कॉलेज, मेरठ।

उन्नीसवीं शताब्दी तक समयानुसार मान्य कला शैलियों के माध्यम से भारतीय चित्रकला की परम्परा विभिन्न रूपों में विकसित होती रही थी। किन्तु मुगल कला, राजधानी चित्र– शैली और पहाड़ी कला परम्परा के पश्चात् भारतीय कला के सहज क्रम में गतिरोध सा उत्पन्न हो गया था। अनिश्चित राजनैतिक, सामाजिक परिस्थितियों ने नवीन संघर्षों को जन्म दिया। अंगेजों ने जिस प्रकार भारत में सामाजिक व वर्गीय विषयता उत्पन्न करने की चेष्टा की थी। उसी प्रकार कला क्षेत्र में भी उन्होने यही नीति अपनायी। एक ओर भारतीय परम्परागत शैलियों का समूल नष्ट करने का प्रयास किया गया तो दूसरी ओर कलकत्ता, बम्बई, मद्रास व लाहौर में कला विद्यालयों में यूरोपीय पद्धति का सूत्रपात था। राष्ट्रपति जागृति से भारतीय कला की अवरुद्ध धारा सर्वधा नवीन पथ पर अग्रसर हाती गई और इस नवीन युग के प्रणेता बने अवनीन्द्रनाथ ठाकुर, ई०बी० हैवेल और डा० आनन्द कुमार स्वामी आदि। अवनीन्द्रनाथ के कला के विषय में अपने विचार हैं।

कला की इस नवीन शैली को बंगाल स्कूल का नाम दिया गया क्योकि सौन्दर्य शास्त्र की उन्नति या विकास एसथैटिक सर्वप्रथम बंगाल से ही शुरू हुआ। बंगाल स्कूल शब्द न तो जातिय विकास से सम्बन्धित हैं और न ही समय काल से सम्बन्धित है। यह शब्द तो केवल शैली से अर्थ रखता है। बंगाल की अपनी एक ऐतिहासिक महत्ता है। क्योंकि यह अंग्रेजी ताकत की पहली जगह थी। वारेन हेसिटंग्ज के समय में कलकत्ता अंग्रेज साम्राज्य की राजधानी थी। यह एक धन धान्य से पूर्ण शहर था। उस समय यहाँ अध्ययन की सभी सुविधायें उपलब्ध थी। बडे–बडे पदों के लोग वहाँ अपना घर बनाकर रहते थे।

समयानुसार बंगाल के कुछ प्रतिभाशाली कलाकारों का एक समूह अवनीन्द्र–नाथ ठाकुर के शिष्यत्व में भारतीय कला की गम्भीर साधना में प्रवृत्त हुआ। प्रथम कार्य अवनीन्द्रनाथ टैगोर ने यूरोपीय अध्याय की पद्यति का बहिष्कार किया। इनके शिष्यों में देवी प्रसाद राय चौधरी, क्षितिन्द्रनाथ मजूमदार, कनु देसाई, असित कुमार हालदार, शरदाचरण उकील, नन्दलाल बसु, कुलुलचन्द डे, के, वेंकाटप्पा आदि बहुत से कलाकार थे। इन्हीं कलाकारों के साथ ही हमें लाहौर के कलाकार अब्दुर्रहमान चुगताई का उल्लेख भी मिलता है, जो भारतीय कला के पुनरूत्थान काल में अपना अलग महत्वपूर्ण स्थान रखते है।

चगुताई का जन्म लाहौर में हुआ था। गहन धार्मिक आस्था वाले मुस्लिम परिवार के अनुसार ही आपकी प्रारम्भिक शिक्षा दीक्षा हुई। आपके परिवार ने पीढ़ी दर पीढ़ी कला के विभिन्न रूपों में सेवा की थी। मुगल काल से ही आपके परिवार जन मुख्य भवन शिल्पी व वास्तुकार रहे थे और लाहौर व देहली के ऐतिहासिक भवनों के निर्माण में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया था।

जिस प्रवाह, जिस कला शैली और मूलभूत धारणाओं को लेकर बंगाल स्कूल विकसित हो रहा था, चुगताई उससे भिन्न एक नई दिशा की ओर अग्रसर थे। उन्होने कला की किसी विशेष परिपाटी को जन्म नही दिया। न ही उनके चित्रों के मूल में कोई पूर्व निर्धारित योजना अथवा सीखी हुई दक्षता ही थी, तथापि अन्तः में संजोई अति मानवीय सौन्दर्य बोध पूरक कला क्षमता, चिंतन और रंग एंव रेखाओं के सामजस्यपूर्ण संघात ने विरासत में पाये संस्कारों के अनुरूप फारसी सौन्दर्य और कुछ मूल तत्वों को एक नया भव्य रूप प्रदान किया, जो आपको तत्कालीन कलाकारों से पृथक एक महत्वपूर्ण स्थान प्रदान करता है।

आपने भारतीय पुनरूत्थान काल की कला में महत्वपूर्ण योगदान दिया, परन्तु न तो उनका अवनीन्द्रनाथ के साथ गुरू चेले का सम्बन्ध और न ही बंगाल स्कूल के कलाकारों की भाँति वह नियमित रूप से इस धरा से नही जुडे, बल्कि स्वयं अपने संघर्ष से आलोचकों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने में सफल हुए। अब्दुर्रहमान चुगताई की कला को इस्लामी कला का नाम दिया गया और यहाँ तक की चुगताई को इस्लामी कला का रेम्ब्रा का दर्जा दिया गया। लंदन की पत्रिका ''द टाइम्स'' 1976 में डा० जेम्स डिकिन्सन द्वारा लिखे गये एक लेख द्वारा आपको ये दर्जा प्राप्त हुआ।

तत्कालीन राजनैतिक, सामाजिक परिस्थितियों के कारण चुगताई की कला के कुछ मूलभूत अन्तर उन्हें समकालीन कलाकारों से अलग करते है। चुगताई ने न केवल अपने विषय व माध्यम भारतीय रखे बल्कि काव्य पर चित्र रचना करने की भारतीय परम्परा को जो राजस्थानी, मुगल व पहाडी शैली में चली आ रही थी परन्तु अब समाप्त प्रायः थी को फिर से पुर्नजीवन दिया। इस ओर अब्दुर्रहमान चुगताई का पहला प्रयास ख्य्याम की शायरी पर

चित्र रचना था। इस प्रयास की पूर्णता पहले उमर ख्यियाम और फिर इकबाल के काव्य पर की गई चित्र रचना से मिलता है। गालिब की शायरी पर भी आपने चित्र रचना की। जिसके दो संग्रह प्रकाशित हो चुके है। पहला मुरक्का–पे–चुगताई और दूसरा नक्श–ए–चुगताई। ये दोनो चित्र संग्रह गालिब की शायरी के साथ प्रकाशित हुये है। इकबाल की शायरी पर चित्रित चित्रों का संग्रह अम्ल–ए–चुगताई के नाम से प्रकाशित है। जिसकी एक प्रति माडर्न आर्ट गैलरी जयपुर हाऊस दिल्ली की लाइब्रेरी में सुरक्षित है।

चुगताई की कला रेखा प्रधान रही है और इस क्षेत्र में अपनी निपुणता के कारण ही आपने अन्तराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त की। कुछ और समकालीन कलाकारों जैसे कनु देसाई, क्षितिन्द्रनाथ मजूमदार आदि का कार्य भी लगभग इसी प्रकार का रहा परन्तु एक ही माध्यम होते हुए भी चुगताई की निपुणता और सतत् प्रयत्न अलग ही दिखाई पड़ता है। आरम्भ में उन्हें समकालीन कलाकारों का विरोध भी सहना पडा था। 1920 ई0 में लाहौर में आपके चित्रों की पहली प्रदर्शनी हुई। इससे आपको राष्ट्रीय व अर्न्तराष्ट्रीय मान्यता मिलने लगी।

बंगाल स्कूल के कलाकारों का प्रेरणा स्त्रोत रही – मुगल, राजस्थानी व यूरोपीय प्रभावी युक्त मिश्रित शैली। परन्तु अब्दुर्रहमान चुगताई की प्रेरणा स्त्रोत थी, फारसी शैली, जो मुगल व पहाडी शैली का मुख्य उद्गम स्त्रोत थी। चुगताई ने मूल स्त्रोत से प्रेरणा ग्रहण करने का प्रयास किया न कि द्वितीय स्त्रोत से। इसका प्रमाण उसके चित्रों में मिश्रित छोटे पौधों से लेकर कपड़ों की फरहान तक में मिलता है। रंगों में भी इसी शैली का प्रभाव है। आकृतियों में लयात्मकता, गीत माधुर्य, सौन्दर्य व कोमलता मूर्त रूप से प्रकट होती हैं। चुगताई के चित्रों में सामजस्य पूर्ण रूप से दृष्टिगत होता हैं, जो चित्रकला के सिद्धान्तों में मुख्य भूमिका निभाती है।

अब्दुर्रहमान चुगताई का बंगाल स्कूल से व बंगाल स्कूल के कलाकारों से कोई सम्पर्क नही था। बंगाल स्कूल के समकालीन होने के कारण शायद विद्वानों और आलोचकों ने उन्हें बंगाल स्कूल का कलाकार माना हैं। इनकी तकनीक बंगाल स्कूल के कलाकारों से मेल खाती है अर्थात् अब्दुर्रहमान चुगताई भी वाश पद्धति से चित्रण का कार्य करते थे। इसी कारण से आपको बंगाल स्कूल से जोड़ा जाता है। चुगताई ने न तो बंगाल में कभी कला का अ ध्ययन ही किया है और न ही आप कभी बंगाल कला के उद्देश्य से ही गये थे। अब्दुर्रहमान चुगताई के पुत्र आरिफ रहमान चगुताई के अनुसार चगुताई को बंगाल स्कूल का कलाकार नही कहा जा सकता है।

मेयों स्कूल ऑफ आर्ट्स के अनुसार अब्दुर्रहमान चुगताई का सम्बन्ध लीथो आर्ट के विभाग से था। अतः आर्ट स्कूल के प्रिन्सिपल ने तथा वाइस प्रिंसिपल शेर मुहम्मद ने मिलकर यह तय किया कि अब्दुर्रहमान चुगताई इस साल गर्मियों की छुट्टियों में कलकत्ता जायेगें और कलकत्ता के गवरमेन्ट प्रैस में जाकर तकनीकी जानकारी और वहाँ के बारे में जान पहचान करेंगें। अतः सन् 1916 ई0 की छुट्टियों में वह अब्दुर्रहमान चुगताई कलकत्ता गये। इसी समय में आपने रविन्द्रनाथ टैगोर, गगेन्द्रनाथ टैगोर, नन्दलाल बोस और अन्य कलाकारों से व्यक्तिगत साक्षात्कार किया और साथ ही साथ अपना काम भी जारी रखा।

कलकत्ता में अब्दुर्रहमान चुगताई उस्ताद हुसैन बख्श के पास ठहरे जो एक प्रसिद्ध चित्रकार थे। उस समय स्टेज पर नाटक होते थे और आगा हश्र इन नाटकों को करवाते थे। हुसैन बख्श इन्हीं के नाटकों के लिए स्टेज तैयार करवाते थे। उस्ताद मुहम्मद दीन, उस्ताद ठाकुर सिंह और अन्य कलाकार भी हुसैन बख्श के साथ कार्य करते थे। अब्दुर्रहमान चुगताई को इन लोगों से मिलने से काफी बहुत फायदा हुआ, उस्ताद शेद मुहम्मद और उस्ताद हुसैन बख्श एक ही उम्र के थे, और दोनो को बहुत बड़े कलाकार माना जाता था।

कलकत्ता में अब्दुर्रहमान चुगताई ने कलाकारों को जिस तरीके से काम करते देखा उस बात ने उन पर बहुत असर छोडा और कला की ओर उनका झुकाव अधिक हो गया। कलकत्ता से आने के बाद चुगताई ने कलकत्ता की एक अंगेजी पत्रिका माडर्न रिव्यू जो उस समय की एक प्रसिद्ध पत्रिका थी, के सम्पादक रामानन्द चटर्जी को अपनी पेंटिंग छपने के लिये भेजी और इस तस्वीर पर लिख दिया था "ये तस्वीर खान साहब मियां गुलाम रसूल, डिप्टी सुपरिटैन्डैन्ट पुलिस लाहौर के मजमुऐ इरसाल करते है। अतः यह रंगीन तस्वीर इसी नाम और विवरण के साथ माडर्न रिव्यू 1917 में छपी, जिसका पारिश्रमिक 25/– रूपये कलाकार को मिला। और इस के अलावा उस पत्रिका की पाँच प्रतियाँ भी कलाकार को मिली। यह चित्र जनता में बहुत प्रसिद्ध हुआ। एक कारण यह भी था कि उस समय "माडर्न रिव्यू" पत्रिका न सिर्फ हिन्दुस्तान में बल्कि हिन्दुस्तान से बाहर भी हर किस्म के लोगों में एक प्रसिद्ध पत्रिका थी। अतः जब माडर्न रिव्यू के बाद के संस्करणों में 1917–1918 के फरवरी और सितम्बर तथा 1919 में सितम्बर के संस्करण में चुगताई के अन्य चित्र भी छपे, तो चुगताई को एक कलाकार की हैसियत से स्वीकार कर लिया गया। हिन्दुस्तान और अधिकतर बंगाल में ये सारे चित्र बहुत ही प्रसिद्ध हुए थे, और बाद में रामानन्द चटर्जी ने इन चित्रों की एलबम को कई हिस्सों में छापा जो चटर्जीज के नाम से विख्यात है।

कुछ और समानतायें जो चुगताई और बंगाल स्कूल के कलाकारों को जोडती है, उनमें बंगाल शैली के चित्रों में अजन्ता के चित्रों की आत्मा का दर्शन होता है। जो कोमल, लयात्मक तथा गतिपूर्ण रेखायें अजन्ता के चित्रों में बनी हैं, उन्हीं का समावेश बंगाल के चित्रों में करने का प्रयास किया गया है। तथा यही कोमलता लयात्मकता व गतिपूर्ण रेखायें हमें चुगताई के चित्रों में भी देखने को मिलती है। दोनो अर्थात् बंगाल स्कूल के कलाकारों तथा चुगताई के चित्र सरल तथा स्पष्ट है। कहीं भी कठोरता का पुट नही है। दोनो की ही रंग योजना बहुत आकर्षक है, कहीं भी चटख या भडकीलें रंगों का प्रयोग नही किया गया है, तथा वातावरण में रंगों का सामजस्य स्थापित करने के लिए "वाश तकनीक" का प्रयोग किया गया है। दोनो की ही शैलियों में मुगल तथा राजस्थानी शैलियों का पुट भी दृष्टिगोचर होता है। छाया प्रकाश बहुत ही कोमलता के साथ दिखाया गया है। कहीं भी अखरने वाला

विरोधाभास रंगों में नही है। चुगताई की शैली में मुगल तथा राजस्थानी शैलियों के प्रभाव के साथ–साथ ईरानी, फारसी तथा जापानी शैलियों भी दृष्टिगत होती है। शरीर रचना के नियमों में दोनो ने ही प्राचीन सामान्य पात्र विधान का पालन किया है। प्रायः प्राचीन, ऐतिहासिक, पौराणिक एवं साहित्यिक विषयों का चित्रण किया गया है तथा समसायिक भारतीय घरेलु जीवन के भी चित्र बनाये गये है। किन्तु तत्कालीन राजनीतिक वातावरण का दोनो ही की चित्रकला पर तनिक भी प्रभाव नही पडा है।

अब्दुर्रहमान चुगताई ने फारसी तथा भारतीय शैलियों के मिश्रण से अपनी सर्वथा नवीन और मौलिक शैली की सृष्टि की है। आपकी रचनाओं की प्रायः सभी ने प्रशंसा की है। चुगताई की कला रेखा प्रधान है। आपके चित्रों में आकृतियाँ कलात्मक तथा अलंकारिक है तथा रचनाओं में कलात्मकता के साथ–साथ उच्च कोटि की भावुकता भी है। भारतीय तथा इस्लामी दोनो प्रकार की रचनाओं में चुगताई को समान सफलता मिली है। माधुर्य आपके चित्रों का विशेष गुण है। बंगाल स्कूल के कलाकारों तथा अब्दुर्रहमान चुगताई दोनो ही ने भारतीय शैली और परम्परा का अनुकरण करते हुए अपनी कल्पना को स्वतन्त्र विकास देने में बहुत सफलता पाई। बीसवीं शताब्दी के कलाकारों ने भारतीय कला परम्परा के पुर्नजागरण की प्रेरणा के लिए अजन्ता के मनोहारी चित्रों को अपनाया। कुछ अन्य कलाकारों ने मुगल और बाद में राजपूत तथा पहाडी लघु चित्रों को अपना आदर्श बनाया। पृष्ठभूमि का यथावत् चित्रण, यथार्थ के सादृश्य पर जोर आदि पाश्चात्य चित्रण की विशेषताओं को त्याग दिया गया। पौराणिक और अन्य उच्च कोटि के साहित्य जैसे रामायण, महाभारत, गीता, पुराण, कालीदास और उमर ख्यय्याम की रूबाइयों, गालिब, इकबाल के काव्य तथा भारतीय इतिहास की स्मरणीय घटनाओं आदि सभी स्त्रोतों से आदर्शमूलक विषयों को चुनकर कलाकारों ने उनमें अपनी कल्पना शक्ति द्वारा प्राण प्रतिष्ठा की। रेखाओं के सौन्दर्य और अतीत की कला परम्परा की शक्तिमत्ता पर सब से अधिक बल दिया गया। प्रत्यक्ष विवरण, डिजाइन की सुकुमारता और इन से अधिक एक अन्तनिहित मूल काव्यात्मक भाव– भंगिमा के कारण इन चित्रों को एक विशेष सौन्दर्य मिला। ये चित्रण लय और प्रेरणा से युक्त है और पाश्चात्य सादृश्य मूलक शैली से बहुत भिन्न हैं। इस शताब्दी के कलाकारों का मुख्य उद्देश्य पूर्वी परम्परा का पुनरूद्धार था। परन्तु उक्त उद्देश्य का ध्यान रखते हुए भी कलाकार अपनी वैयक्तिक के विकास के प्रति उदासीन ने थे।

इन सब के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है कि अब्दुर्रहमान का बंगाल स्कूल से कोई सम्बन्ध नही था। केवल समकालीन होने के कारण तथा तकनीक व चित्रण कार्य में समानता होने के कारण आपको बंगाल स्कूल का कलाकार माना जाता है। बंगाल स्कूल के कलाकारों के चित्रों के साथ ही चुगताई के चित्रों का छपना केवल आपके समकालीन होने के कारण से है।